प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक ,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधिः पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ | अंक- १९४ | भोपाल, ११ फरवरी, डाक १२ फरवरी २०२६ | भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित | पृष्ठ -८ | मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

सर्वोदय की रस्म अंत्योदय का पहरा। सच्ची है यह बात राज बहुत गहरा।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-१३

कैलाश आदमी

सभी कहते हैं हर नागरिक की भूमिका अच्छे इंसान की होना चाहिए। यह सही है किंतु अच्छा इंसान होना ही काफी नहीं है बल्कि अच्छे इंसान के पक्ष में खड़ा होना भी जरूरी है।

माना कि आप एक अच्छे व्यक्ति हैं और आपमें भरपूर इंसानियत है लेकिन समाज में जो अन्य अच्छे व्यक्ति हैं उन्हें भी समाज में भरपूर आदर, सम्मान और स्थान मिलना चाहिए। मेरे मतानुसार सबसे अच्छा इंसान वह है जो समाज के अंतिम व्यक्ति के पक्ष में खड़ा हो। यह आवश्यक नहीं कि समाज का अंतिम व्यक्ति अच्छा इंसान होते हुए भी, समाज में अच्छा स्थान प्राप्त हो।

गांधी कहते थे कि चाहे कोई गरीब हो या अमीर सबका उदय होना चाहिए इसीलिए उन्होंने टालस्टाय जैसे दार्शनिक के सर्वोदय सिद्धांत को अपनाया। इस युग में भी समाज में विषमता और असमानता व्याप्त थी। गांधीजी कांग्रेस के साथ अधिनायकवाद विरोधी आंदोलन में खड़े हुए लेकिन उन्होंने यह देखा कि समाज में अंतिम व्यक्ति के साथ न्याय नहीं हो रहा है। यही कारण है कि वह समाज में सर्वाधिक उपेक्षित है। इसीलिए उन्होंने समाज के अंतिम व्यक्ति का पक्ष लिया और कहा कि उसके पक्ष में खड़े होना आवश्यक है ताकि उसे न्याय मिल सके। गांधीजी कहते थे कि अहिंसा उनका परमेश्वर है और सत्य के बारे में कहते थे कि सत्य भी उनका परमेश्वर है। जब वे अहिंसा के पथ पर चलते तो सत्य कहता कि अहिंसा को उसके जरिए प्राप्त करो और जब सत्य की तलाश में निकलते तो अहिंसा कहती कि सत्य मेरे जरिए ही प्राप्त हो सकता है।

सर्वोदय कार्यकर्ता या लोकसेवक के सामने भी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि वह दुविधा में पड़ जाता है। सर्वोदय का सिद्धांत है कि चाहे गरीब हो या अमीर सबका उदय हो। ऐसी स्थिति में सर्वोदय से जुड़ा व्यक्ति सोचने लगता है कि वह किसके पक्ष में खड़ा हो। सत्य और अहिंसा का सिद्धांत ठीक है लेकिन वह कौन सा रास्ता चुने? गांधीजी कहते हैं कि ऐसे वक्त अंतरात्मा की पुकार सुनना चाहिए क्योंकि वे अंतरात्मा को परमपरमेश्वर मानते थे। अंतरात्मा उनसे कहती कि सत्य में ही अहिंसा और अहिंसा में ही सत्य निहित है। इसलिए वे अनिर्णय की स्थिति का परित्याग कर अहिंसा के सहारे सत्य के साथ खड़े दिखाई देते थे। उनका कहना था- सत्य साध्य है और अहिंसा साधन। यही सोचकर उन्होंने अहिंसा के लिए सत्याग्रह का मार्ग चुना था। जहां तक सर्वोदय और अंत्योदय का प्रश्न है गांधीजी के सामने यदि इन दोनों में से एक के चयन की नौबत आती तो मुझे विश्वास है कि वे अंत्योदय के पक्ष में ही खड़े दिखाई देते।

गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में समाजवाद को श्रेष्ठ बताया था किंतु १९१५ में स्वदेश लौटकर उन्होंने सर्वोदय को समाजवाद का अगला चरण बताया। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में अपना पूरा जीवन खपा दिया और सामाजिक व आर्थिक समाजवाद के पक्ष में खड़े रहे ताकि समाज में व्याप्त असमानता और विषमता को दूर किया जा सके। २५ मई १९४७ को एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा- समाजवाद की जड़ में आर्थिक असमानता है। थोड़े लोगों को करोड़ जबकि गरीब को सूखी रोटी भी नसीब नहीं हो पाती इसीलिए उन्होंने ट्रस्टीशिप अर्थात न्यासी का सिद्धांत गढ़ा और संपन्न लोगों से कहा कि वे स्वेच्छा से अपनी कमाई का दस प्रतिशत भाग गरीबों को समर्पित करें। उन्होंने कहा कि रामराज्य का विचार मेरे मन में आता है तब मैं सोचता हूं कि शासक, जमींदार और पूंजीपति अपनी संपत्ति के मालिक नहीं न्यासी बनकर रहें। गांधीजी के आध्यात्मिक शिष्य आचार्य विनोबा भावे ने इसके लिए भूदान का मार्ग अपनाया। इससे वे एक तरफ देश को नक्सलवाद (तत्कालीन आतंकवाद) से मुक्त करना चाहते थे वहीं भूदान के जरिए उन लोगों को जमीन मुहैया कराना चाहते थे जो पूरी तरह भूमिहीन है। वे इस कार्य में सफल भी हुए। यह बात अलग है कि सरकार ने भूदान में प्राप्त लाखों एकड़ जमीन को बांटने का जिम्मा ले लिया किंतु जिन भूमिहीनों को जमीन की जरूरत थी उनके बीच भूदान में प्राप्त जमीन नहीं बांटी जा सकी और विनोबा जी का अंत्योदय का सपना अधूरा रह गया।

मैंने आरंभ में कहा कि अच्छा इंसान होना ही काफी नहीं है बल्कि उसके पक्ष में खड़े होना आवश्यक है। जो लोग गांधी विनोबा के अनुयायी या उनके विचारों पर चलने का दावा करते हैं उन्हें अच्छे लोगों के पक्ष में खड़े होना चाहिए ताकि सर्वोदय से अंत्योदय का गांधी विनोबा का विचार क्रियान्वित हो सके। देश में ५० प्रतिशत लोगों के पास कुल संपत्ति का ६.४ प्रतिशत (१.७ लाख रुपए) जबकि १० प्रतिशत अमीरों के पास ६० प्रतिशत (८८ लाख रुपए) है। सबसे अमीर (०.१ प्रतिशत) के पास २२६१ करोड़ जबकि गरीब के पास १.३ लाख रुपए है। राष्ट्रीय आय का २३ प्रतिशत सबसे अमीर (एक प्रतिशत) दबाए बैठा है। वही अमीर दक्षिण अफ्रीका में ८६ प्रतिशत जबकि गरीब के पास १० प्रतिशत धन है। इसके बाद ब्राजील, अमेरिका, चीन और भारत का नंबर आता है जिससे स्पष्ट है कि स्वाधीनता प्राप्ति के ७९ साल पूरे होने के बाद भी भारत असमानता और विषमता के मकड़जाल में उलझा हुआ है। मेरे विचार से असमानता और विषमता के शिकार लोगों को शराब व अन्य व्यसनों में उलझाने के साथ ही उसे धर्मांधता में झोंकते हुए सरकार अमीरों के पक्ष में ही काम कर रही है और गरीब इस तथ्य को नहीं समझ रहा। इसलिए आवश्यक है कि उन्हें समुचित ज्ञान व शिक्षा मिले। अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

सर्वोदय की रस्म अंत्योदय का पहरा।
सच्ची है यह बात राज बहुत गहरा।।

नागपुर में देश की संस्कृतियों का अदभुत समागम

निर्दलीय के लिए रति चौबे

नागपुर। शहर की प्रतिष्ठित संस्था हिंदी महिला समिति ने एक खूबसूरत प्रतियोगिता विर्दभ हिंदी-साहित्य सम्मेलन मोर भवन मे आयोजित की। भारत विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल है। आज प्रदूषण बचाओ, बेटी बचाओ, देश को बचाओ आदि मुद्दों पे सभी लगे है पर देश.की संस्कृतियों को कैसे बचाये इस पर.ध्यान बहुत कम लोगों का जाता है ..यह कार्यक्रम इसी कमी की पूर्ति के उद्धेश्य को लेकर हर वर्ष हम करते हैं, प्रांतीय व्यंजन के.साथ उसी प्रांत की वेश- भाषा के साथ प्रतियोगियों.ने

कार्यक्रम को रोचक,सुंदर व आर्कषक बनाया गजब का ही उत्साह वर्धक वातावरण रहा। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि संस्थान की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती कृष्णा शर्मा रही और निर्णायक शहर के प्रसिद्ध रेस्टोरेंट मस्टर्ड की एम.डी.श्रीमती हनी समीर त्रिपाठी(न्यूमरोलाजिस्ट) तथा नागपुर होटल मेनेजमेंट तिरूपड़े कालेज के प्रोफेसर योगेश .मेश्राम रहे, लगभग 40 प्रतियोगियों ने इस सुंदर प्रतियोगिता में प्रवेश लिया ।

संस्था अध्यक्षा रति चौबे तथा कार्याध्यक्ष डा.चित्रा तूर.ने इस प्रतियोगिता को,संयोजन व.आयोजित किया। प्रस्तावना रति चौबे ने दी। अतिथि परिचय व निर्णायको का जन संपर्क- अधिकारी डा. कविता परिहार व उपाध्यक्ष रेखा पांडे ने तथा डा.चित्रा तूर ने दिया ।

कार्यक्रम का आरम्भ गणेश वंदन दीपप्रज्वलन व सुप्रसिद्ध डांस दिवाने की नृत्य कलाकार के मनमोहन नृत्य वंदनासे से हुआ कार्यक्रम का संचालन सचिव रश्मिमिश्रा व कविता परिहार ने किया। स्वागत शाल व स्मृतिचिह्न से अध्यक्ष रतिचौबे,डा.चित्रातूर सुजाता दुबे उपाध्यक्ष ने अतिथियों का किया। विभिन्न व्यंजनों की हर प्रांत की वेशभूषा में सजकर प्रतियोगियों ने कार्यक्रम को मनभावन बना दिया । साथ ही समिति की मुख्य अतिथि कृष्णा शर्मा की तीसरी पीढ़ी पोते की नई बहु मानसी का संस्था की पर परम्परानुसार गोद भराई का महिलाओं ने आयोजन किया। छबि,लक्ष्मी लता व हेमलताजी व अन्य ने सुंदर नृत्य प्रस्तुतियां दी,सभी प्रतियोगियों ने मंच पे अपनी प्रस्तुति दे अपनी कला का प्रर्दशन किया । प्रतियोगिता में जीत का ताज पहनने वाले रहे। प्रथम मेंहदीबाग आयुन- मलक टीम की महिलाएं रही, द्वितीय ताज पहना-रोहिणी देशकर ने तो तृतीय ताज गया अर्चना चौरसिया के पास । तिरपुढ़े कालेज के विधार्थी प्रथम विजेता-केतन,द्वितीय रही निहारिका तो.तृतीय रहे सार्थक दुबे....लड़को ने सिद्ध कर.दिया कि वे .महिलाओ से कम.नहीं है।

उत्तम प्रस्तुति में अनिता गायकवाड़- तमिल, आशा चौधरी- राजस्थानी तो रिंकू घोष ने- बंगाली में प्रशंसा, प्राप्त की । इसके अलावा इस में संतोष बुद्धराजा- पंजाबी,लक्ष्मी वर्मा उ.प्रदेश, उमाहरगन-गुजराती,मीना तिवारी-बिहार,शुभांगी बाघ- मराठी,किरण हटवार,रिंकू घोष- बंगाली,पल्लवी,पियूष दीपेन्द्र, आशुतोष, वाघमारे, आम्रकानन,आयुष,सार्थक, अमरजीत ,तनिष्क,सजल बोकडे.आदि तिरपुडे कालेज के 15 विधार्थी ने.भाग लिया.आभार.ममता विश्वकर्मा का रहा। शानदार कार्यक्रम रहा। निर्णायक हनी

त्रिपाठी एम.डी,मस्टर्ड व योगेशजी मेश्राम ने कार्यक्रम की सराहना की मुख्य अतिथी कृष्णा शर्मा, अनुसार शर्मा,वंदना शर्मा ने शुभकामनाएं देकर कार्यक्रम को सहारनीय योगदान दिया। स्वल्पाहार के साथ समाप्त हुआ,साथ ही आरजेएस पी.बी.एच.सकारात्मक भारत उदय आंदोलन के ग्रंथ 6 राम जानकी संस्थान की पुस्तक का भी इस खूबसूरत कार्यक्रम में विमोचन किया गया। अध्यक्ष रतिचौबे,कार्याध्यक्ष डा.चित्रा तूर तथा जनसंपर्क-अधिकारी डा. कविता परिहार के संयुक्त प्रयासों से पूरा समारोह गौरवमय रहा। आभार कोषाध्यक्ष ममता विश्वकर्मा ने दिया ।

निर्दलीय विशेष/ राकेश कुमार वर्मा

प्रणय पर्व - प्रेम और कर्तव्य का अंतर्संबंध

आत्मा तीन नश्वर शरीरों में समाहित है, पहला शरीर मांस है, जिसे स्पर्श कर अनुभव कर सकते हैं। दूसरा शरीर तंत्रिका ऊर्जा है जो मांस को चैतन्य करती है और तीसरा आत्मा का शरीर है जो अदृश्य है। आत्मा का शरीर कर्मों के ऋणों से बंधा है। जब तक यह शरीर पिछले जन्मों के संचित ऋणों से मुक्त नहीं हो जाता, आत्मा को मत्यु लोक में भटकना पड़ता है।

यम देवता मृत्यु और पुनर्जन्म से संबंधित हैं। उनका पाश हमारी आत्मा का बंधन है। जबकि कामदेव पुष्पशरों से निरंतर वासनाओं को उद्वेलित करते रहते हैं।आख्यानों में प्रेम और ऋण का परस्पर अंतर्संबंध हैं। जिसे श्रीराम के वंशज मंधाता (जिनके माता-पिता एक हैं) द्वारा प्रस्तुत तर्कों से समझा जा सकता है। इसमें उनके पिता वल्लभी के सम्राट युवनाश्च द्वारा पूछे गये प्रश्न की विवेचना है । दो घनिष्ठ मित्रों में से यदि एक शापवश कन्या बन जाता है। ऐसे में वे पति पत्नी की तरह जीवन बिताना चाहते हैं। लेकिन कन्या बने युवक के आत्मज पूछते हैं कि उनका श्राद्ध कौन करेगा। ऐसे में युवक बने कन्या को कैसे व्यवहार करना चाहिए—अपने पूर्वजों की संतुष्टि के लिए एक पुरुष की तरह या अपने मित्र की संतुष्टि के लिए एक महिला की तरह मंधाता ने कहा - एक पुरुष की तरह क्योंकि एक महिला की तरह व्यवहार करना कामना के आगे समर्पण करना है। कामना धर्म के लिए बाधक है, जो समय के साथ परिवर्तित होती रहती है जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। वहीं जो समय के साथ नहीं बदलता वह है कर्तव्य, जिस पर भरोसा किया जा सकता है।यह जन्म के समय तय होता है। क्योंकि जन्म हमारे जैविक और वंशानुगत गुण को प्रकट करते है, इसी प्रकार के दर्शन से प्रेरित होकर जरतकारु और अगस्त्य का विवाह हुआ के जिनके संतान में पुत्र को पुत्र और पुत्री कहा गया, क्योंकि उनके जन्म से ही उनके माता-पिता को पुत नामक नरक से मुक्ति मिली । कला में पितरों को आमतौर पर पुरुष रूप में दर्शाया जाता है, क्योंकि प्रतीकों की भाषा में पुरुष रूप आत्मा का और स्त्री रूप शरीर का प्रतीक है।

ग्रीस में प्रेम के देवता को इरोस नामक एक चंचल बच्चे के रूप में देखा जाता था। एक कुशल धनुर्धर की तरह वह दो प्रकार के तीर रखता था - एक सोने की नोक वाला और दूसरा सीसे की नोक वाला। सोने की नोक वाले तीर लोगों को अनुराग के लिए प्रेरित करते थे। जबकि सीसे की नोक वाला तीर घृणा उत्पन्न करता थे। सौंदर्य और उर्वरता की देवी वीनस के इस पुत्र को सामाजिक नियमों की परवाह नहीं थी, जिससे संगठन और व्यवस्था के देवता अपोलो चिन्तित थे जबकि रचनात्मक अराजकता के देवता डायोनिसस को इस अनैतिकता से प्रसन्नता होती थी।

वेलेंटाइन डे की उत्पत्ति से जुड़ी एक प्रचलित मान्यता क्लॉडियस द क्रूर से संबंधित है। इसके अनुसार, तीसरी शताब्दी के दौरान रोम में वेलेंटाइन सेवा करने वाले एक पुजारी थे। जब सम्राट क्लॉडियस द्वितीय ने यह निर्णय लिया कि अविवाहित पुरुष विवाहित पुरुषों की तुलना में बेहतर सैनिक होते हैं, तो उन्होंने अपने भावी सैनिकों के लिए विवाह प्रतिबंधित कर दिया। वेलेंटाइन ने क्लॉडियस की अवज्ञा की और गुप्त रूप से युवा प्रेमियों के विवाह संपन्न कराते रहे। इस अपराध के लिए क्लॉडियस ने लगभग 270 ईस्वी में 14 फरवरी को वेलेंटाइन को मृत्युदंड का आदेश दिया। आज अन्य पर्वों की तरह वैलेंटाइन डे कारपोरेट जगत से संचालित हैं। दुनिया भर में उपहार निर्माताओं ने इससे मिलने वाले व्यावसायिक अवसर का लाभ उठाने के लिए इसे लोकप्रिय बनाया। अन्यथा प्रेम संबंधों में तो हर दिन एक उत्सव है। मानवीय भावनाओं का स्नेह, अनुराग पूर्व नियोजित कोई विशेष दिन नहीं होता । लेकिन आज माता, पिता, मित्र, शिक्षक बहन,पत्नी, प्रेमिका इत्यादि के दिवस के नाम पर बाजार चांदी काट रहा है ।

भारत में, प्रेम के देवता को गन्ने और पुष्पों के धनुर्धर के रूप में जाना जाता है। मन को मथन वाले देवता के कारण उन्हें मनमथ भी कहा जाता हैं, जो तोते पर सवार मछली ध्वज लहराते हुए गन्ने के धनुष पर मधुमक्खियों की प्रत्यंचा पर पुष्पशर का संधान कर जीवन में प्रवेश करते हैं । भर्तृहरि रचित श्रृंगार शतकं में उनकी स्तुति है- *शम्भुस्वयम्भुहरयो हरिणेक्षणानां, येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः, वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय, तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ।* अर्थात- जिन्होंने ब्रम्हा,, विष्णु और महेश को मृगनयिनी कामिनियों के घर का चूल्हा-चौका करने के लिए दास बना रखा है, जिनके विचित्र चरित्रों का वर्णन वाणी से नहीं किया जा सकता, ऐसे पुष्पायुध, भगवान् कामदेव को नमन।

कामदेव का कोई आकार नहीं होने के कारण वे अनंग कहलाते है इसलिए उनके प्रतीक के रूप में, सूर्य और चंद्रमा की पूजा की जाती है। जिनकी किरणें शरीर में कामुकता की भावना जगाती हैं। भक्ति काल में कामदेव को विष्णु और लक्ष्मी के पुत्र के रूप में देखा जाता था। कामदेव की तरह, विष्णु भी तोतों, मधुमक्खियों, मकर राशि, तितलियों, फूलों, गन्ने, सुगंध, सुंदरता और मोहक शरारती मुस्कान से जुड़े हैं। विष्णु के रूपों में से एक मोहिनी है। कृष्ण के रूप में, विष्णु मदन-मोहन बन जाते हैं, जो कामदेव को भी मोहित कर लेते हैं। यह आकर्षक प्रेमी बांसुरी बजाते हुए राधा को यमुना नदी के किनारे वृंदावन नामक कुटिया में नृत्य करने के लिए आमंत्रित करते हैं। वहाँ प्रेम का पुनः अनुभव होता है।

भारत में जब शरद ऋतु वसंत में प्रवेश कर रही होती है, तब प्रेम और उर्वरता का उत्सव मनाया जाता है। वैलेंटाइन डे भी मदन उत्सव जैसे प्रेम उत्सवों की तरह मनाया जाता है। यह कोई संयोग नहीं है कि लोहड़ी, मकर संक्रांति, शिवरात्रि और होली जैसे त्योहार भी इसी समय मनाए जाते हैं। पश्चिमी परंपरा में मकर राशि को मछली और बकरी का मिश्रण माना जाता है, जबकि भारतीय परंपरा में इसे मछली और हाथी का मिश्रण माना जाता है जो कामदेव का प्रतीक है। होली एक ऐसा त्योहार है जो कामुकता से भरपूर होता है। होली से दो सप्ताह पहले शिवरात्रि मनाई जाती है, जो शिव की रात है जिसमें एक तपस्वी परोपकार के लिए पार्वती से विवाह कर जीवन की सार्थकता का प्रतिमान गढ़ता है। -भोपाल

गरीब गरीब ही क्यों रह जाता है?

कॉमरेड कृष्ण कुमार

गरीब गरीब ही क्यों रह जाता है इसके पीछे बहुत से कारण हैं। अनुसूचित वर्ग के ज़्यादातर लोग गरीब क्यों हैं — यह सवाल अक्सर उठता है। इसके पीछे की सच्चाई को समझना ज़रूरी है।

पुराने समय में धर्म और सामाजिक व्यवस्था के आधार पर उन्हें सबसे नीचे रखा गया, अर्थात वर्ण व्यवस्था में निचले पायदान पर। इसी कारण उन्हें शिक्षा से वंचित रखा गया। जब शिक्षा ही नहीं मिली, तो वे शिक्षित नहीं हो पाए और धीरे-धीरे गरीबी में डूबते चले गए। जिसके पास शिक्षा नहीं होगी, वह क्या करेगा? अक्सर कम उम्र में शादी कर लेगा, फिर 5-6 या उससे अधिक बच्चे हो जाएंगे। खर्च बढ़ेगा, लेकिन आय नहीं। वह अपने बच्चों को भी शिक्षा नहीं दे पाएगा। ऐसे में कई लड़के नशे की ओर चले जाते हैं।

और आप जानते ही हैं — नशे से आज तक किसी का जीवन नहीं सँवरा, नशा इंसान को बर्बाद ही करता है। गरीबी से निकालने वाली सबसे बड़ी ताकत अगर कोई है, तो वह शिक्षा ही है। जब शिक्षा नहीं होगी, तो मजदूरी ही सहारा बनेगी। दिनभर मेहनत करके 400-500 रुपये कमाए, तो उसमें से 150-200 रुपये गुटखा, तंबाकू या बीड़ी में चले गए, फिर शाम को 70-100 रुपये शराब में खर्च हो गए। अगर शादीशुदा है, तो घर के लिए 50-100 रुपये की सब्ज़ी भी ले जानी है। फिर बच्चों का खाना, कपड़े, छोटी-मोटी जरूरतें?

महीने का औसत निकालें तो बचत कुछ नहीं।बस जैसे-तैसे घर चलता है ..खाना-पीना भर। ऐसी गरीबी में बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित होती है। अगर पढ़ाई नहीं होगी, तो उनकी शादी भी शिक्षित परिवार में नहीं होगी। फिर वही हालात और गरीबी पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। यानी गरीब, गरीब ही रह जाता है।

अगर समाज की गरीबी दूर करनी है, तो सबसे पहले शिक्षित होना पड़ेगा। ज़रूरी नहीं कि हर किसी को सरकारी नौकरी ही मिले, पर शिक्षा आपको एक सम्मानजनक और पेशेवर काम करने लायक बनाती है ,जिसमें इज्जत भी है और आय भी। तभी परिवार और समाज गरीबी से बाहर निकलेगा। समाज और परिवार को नशे से दूर रखना भी उतना ही ज़रूरी है।

समाज की यह भी सच्चाई है — गरीबी को कोई सहारा नहीं देता। यह बिल्कुल कड़वा सत्य है। इसलिए कुछ लोगों को आगे बढ़कर शिक्षित होना ही पड़ेगा। थाली बेचकर किताब खरीदनी पड़े तो खरीदो, हाथ में खाना खा लेना — पर किताब ज़रूर खरीदो।डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने कहा था- शिक्षा शेरनी का दूध है, जो पिएगा वह दहाड़ेगा। नेता लोग आपसे शिक्षा की बात नहीं करते। वह सिर्फ वोट के समय दारू का पव्वा या पेटी देने का लालच देते हैं पर आपके बच्चों की शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और स्कूल की बात नहीं करते।

मेरा सवाल है —क्या एक पेटी या एक पव्वे से आपके घर, समाज और परिवार का विकास होगा? मेरा हर समाज, धर्म, जाति और मजहब के युवाओं से यही कहना है ऊँच-नीच, पाखंडवाद और नशे के चक्कर में मत पड़ो।शिक्षा अपनाओ, जागरूक बनो। तभी देश, समाज, परिवार, गाँव, शहर और कस्बे का नाम रोशन होगा और तभी सच्चा विकास और अमन संभव होगा। -सीकर